3. हय सिद्धांत चालक के महत्व को स्पष्ट करता है ।

4. यह सिद्धांत सकारात्मक पुनर्बलन पर बल देता है ।

5. यह सिद्धांत आवश्यकता के महत्व को स्पष्ट करता है ।

6. बालक को सीखने की अभिप्रेरणा देता है ।

7. यह सिद्धांत उच्च स्तर के लिए अधिक उपयोगी है ।

8. यह सिद्धांत वास्तविक जीवन से जोड़ने पर बल देता है । अभ्यास पर बल, कृत्रिम प्रोत्साहन व पुरुस्कार के प्रयोग पर बल ।

Jerome Seymour Bruner

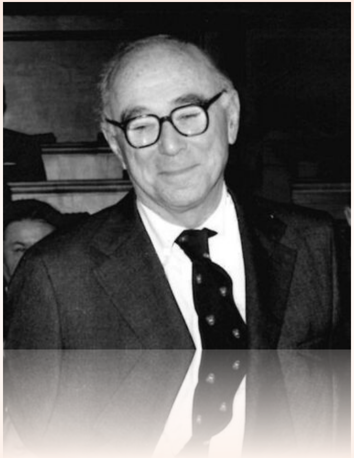

ब्रूनर का संज्ञानात्मक विकास का सिद्धांत

* संज्ञानात्मक विकास का अध्ययन ब्रूनर द्वारा किया गया ।

  ब्रूनर की पुस्तक :-

  (i) The progress of education

  (ii) the relevance of education

* ब्रूनर ने जीन पियाजे के संाानात्मक विकास को अधिक उन्नत बनाते हुए चिन्तन में भाषा को अधिक महत्व दिया ।

* जेरोम ब्रूनर के अनुसार शिशु अपनी अनुभूतियों को मानसिक रुप से तीन तरीकों द्वारा बताया है -

  (i) सक्रियता (ENACTIVE)

  (ii) दृश्य प्रतिमा (ICONIC)

  (iii) सांकेतिक (SYMBOLIC)

ब्रूनर ने मानसिक विकास की 3 अवस्थाएँ बताई

(i) सक्रियता अवस्था/विधि निर्माण अवस्था जन्म से 18 माह तक (लगभग 2 वर्ष तक)

- जीन पियाजे संवेदीपेशीय अवस्था से मिलती जुलती।

(ii) प्रतिमा आधारित अवस्था/दृश्य प्रतिमा विधि अवस्था (2 वर्ष से 7 वर्ष तक)

- जीन पियाजे की पूर्व संक्रियात्मक अवस्था से मिलती-जुलती अवस्था।

(iii) संकेत आधारित अवस्था/चिह्न आधारित अवस्था (7 वर्ष से 16 वर्ष तक)

- जीन पियाजे की तीसरी अवस्था मूर्म संक्रियात्मक अवस्था और चौथी अवस्था औपचारिक संक्रियात्मक अवस्था से मिलती जुलती अवस्था है।

(i) सक्रियता/क्रिया आधारित अवस्था (जन्म – 2 वर्ष)

* इस अवस्था ने बालक क्रियाओं (शारीरिक/मापक) द्वारा सीखता है । जैसे – हाथ–पैर चलाना, वस्तु को पकड़ना, दूख की बोतल देखकर बालक द्वारा मुंह चलाना, वातावरण के साथ प्रतिक्रिया करना आदि ।
* इस अवस्था में बालक दूसरों का अनुकरण करते हैं ।

(ii) दृश्य प्रतिमा/प्रतिमा आधारित अवस्था (2–7 वर्ष)

* इस अवस्था से बालक के सीखने का आधार प्रतिमा/प्रतिबिम्ब होते हैं ।
* बालक प्रत्यक्षीकरण तथा मानसिक प्रतिमाओं से सीखता है ।
* इस अवस्था में भाषा का महत्व होता है ।
* बालक शोर, गति, ध्वनि, प्रकाश से इस अवस्था में प्रभावित होता है ।
* इस अवस्था में बालकों में दृश्य स्मृति विकसित हो जाता है ।

(iii) संकेत आधारित/चिह्न आधारित अवस्था

* इस अवस्था में सीखने का आधार संकेत/चिह्न होते है ।

$$H_2O = \text{जल}, \quad \pi = \frac{22}{7}$$

* इसमें बालक भाषा के द्वारा अपनी अनुभूतियों का व्यक्त करता है ।
* समय व दूरी को समझने लगता है ।
* इस अवस्था में बालक में समस्या–समाधान की क्षमता विकसित हो जाती है ।
* अध्यापक की महत्वपूर्ण भूमिका होती है ।

धन्यवाद